चाबहार बंदरगाह समझौता

प्रलिम्सि के लयि:

चाबहार बंदरगाह, अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परविहन गलयिारा, बेल्ट और रोड इनशिएिटवि

मेन्स के लयि:

भारत के लयि चाबहार बंदरगाह का महत्त्व, भारत और ईरान के मध्य ववािदति क्षेत्र।

स्रोत: द हदिू

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत और ईरान ने ईरान के चाबहार बंदरगाह के संचालन के लयि **10 वर्ष** के अनुबंध पर हस्ताक्षर कयि।

- इस दीर्घकालकि समझौते पर **इंडयिन पोर्ट्स ग्लोबल लमिटिेड (IPGL)** और **ईरान** के **पोर्ट एंड मैरीटाइम ऑर्गनाइज़ेशन (PMO)** के बीच **शाहदि-बेहश्ती टर्मनिल** के संचालन करने हेतु हस्ताक्षर कयि गए।
- ईरान के साथ दीर्घकालकि अनुबंध पर हस्ताक्षर करना मध्य एशयिा के लयि भारत की रणनीतकि एवं आर्थकि दृष्टकिा हस्सिा है।

//

चाबहार बंदरगाह भारत के लिये महत्त्वपूर्ण क्यों है?

- **परिचय:**
  - चाबहार, **ईरान का एकमात्र समुद्री बंदरगाह** है। यह **मकरान तट** पर **सिस्तान एवं बलूचिस्तान प्रांत में** ओमान की खाड़ी में स्थित है।
  - चाबहार में **दो मुख्य बंदरगाह** हैं, **शाहिद कलंतरी** एवं **शाहिद बेहेश्ती बंदरगाह**।
    - ईरान ने भारत को **शाहिद बेहेश्ती बंदरगाह** के निर्माण का प्रस्ताव दिया और भारत ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।
- **चाबहार बंदरगाह समझौते के संबंध में प्रगति:**
  - भारत ने **मई 2015** में **चाबहार बंदरगाह** के विकास के लिये एक **समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर** किये।
  - मई 2016 में **भारत, ईरान एवं अफगानिस्तान** द्वारा अंतर्राष्ट्रीय परिवहन और पारगमन गलियारे **की स्थापना** के लिये **एक त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर** किये, जिसे चाबहार समझौते के रूप में भी जाना जाता है।
    - इस समझौते का उद्देश्य ईरान में चाबहार बंदरगाह को एक प्रमुख पारगमन बिंदु के रूप में उपयोग करके उक्त **तीनों देशों के बीच परिवहन और व्यापार संपर्क में सुधार** करना है।
  - हालाँकि, दीर्घकालिक समझौते को अंतिम रूप देने में समझौते के कुछ खंडों पर मतभेद सहित कई कारकों के कारण बाधा उत्पन्न हुई।
    - भारत एक तटस्थ देश में मध्यस्थता चाहता था, जबकि ईरान अपने देश के न्यायालयों या किसी अनुकूल देश में यह प्रक्रिया करना चाहता था।
    - विवाद का मुख्य बिंदु यह था कि विवादों के समाधान के लिये मध्यस्थता कहाँ की जाए। अब, दोनों पक्ष एक ऐसे समझौते पर सहमत हुए हैं जो उनसे संबंधित हितों को संतुष्ट करता है। अनुबंध में कहा गया है कि किसी भी असहमति को **दोनों देशों के नेताओं के बीच खुले संचार** और सहयोग के माध्यम से सुलझाया जाना चाहिये।
  - इस नवीनतम दीर्घकालिक समझौते का उद्देश्य **स्वचालित नवीनीकरण** प्रावधानों के साथ 10 वर्षों की अवधि वाले प्रारंभिक अनुबंध को प्रतिस्थापित करना है।
- **चाबहार बंदरगाह का महत्त्व:**
  - **वैकल्पिक व्यापार मार्ग:** ऐतिहासिक रूप से अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक भारत की पहुँच काफी हद तक पाकिस्तान के माध्यम से पारगमन मार्गों पर निर्भर रही है।
    - चाबहार बंदरगाह **भारत को** अफगानिस्तान और मध्य एशिया में व्यापार के लिये एक वैकल्पिक मार्ग प्रदान करता है, जिसके लिये भारत पहले पाकिस्तान पर निर्भर करता था।
    - इसके अतिरिक्त, चाबहार बंदरगाह भारत की ईरान तक पहुँच को सुविधाजनक बनाएगा, जो अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे (International North-South Transport Corridor-INSTC) का मुख्य प्रवेश बिंदु है, जो भारत, ईरान, रूस, मध्य एशिया और यूरोप को सड़क, रेल और समुद्र के माध्यम से जोड़ता है।

- **आर्थिक लाभ: संसाधन संपन्न मध्य एशियाई देशों और अफगानिस्तान के साथ** संबंध बढ़ाने के भारत के प्रयासों में चाबहार महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।
    - यह भारत को अपने **व्यापारिक मार्गों में विविधिता लाने** तथा ईरान व अफगानिस्तान के अतिरिक्त रूस, यूरेशिया और यूरोप के **बाज़ारों तक पहुँच** बढ़ाने में सहायता करेगा।
        - **INSTC मार्ग के माध्यम से कार्गो आवाजाही से लागत में 30% और परिवहन में लगने वाले समय में 40% की बचत** होने का अनुमान है, जिससे प्रतिस्पर्धी लागत में त्वरित बदलाव सुनिश्चित हो सकेगा।
    - **मध्य एशियाई देश,** जो संसाधनों से समृद्ध हैं, लेकिन कज़ाखस्तान और उज़्बेकिस्तान जैसे देशों, जो समुद्र तक सीधी पहुँच नहीं रखते हैं, ने हिंद महासागर क्षेत्र से जुड़ने तथा भारतीय बाज़ार में प्रवेश करने के लिये चाबहार का उपयोग करने में **रुचि** दिखाई है।
- **मानवीय सहायता:** चाबहार बंदरगाह अफगानिस्तान में मानवीय सहायता और पुनर्निर्माण प्रयासों के लिये एक महत्त्वपूर्ण प्रवेश बिंदु के रूप में कार्य कर सकता है।
    - कोविड-19 महामारी के दौरान चाबहार बंदरगाह ने **मानवीय सहायता की आपूर्ति** में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
    - चाबहार बंदरगाह के माध्यम से भारत से **अफगानिस्तान** तक 2.5 मिलियन टन **गेहूँ** और 2,000 टन **दालों का निर्यात किया** है।
    - वर्ष 2021 में भारत ने **टिड्डियों के हमलों** से निपटने के लिये बंदरगाह के माध्यम से ईरान को 40,000 लीटर पर्यावरण-अनुकूल **कीटनाशक मैलाथियान** भेजा।
- **रणनीतिक प्रभाव और क्षेत्रीय स्थिरता:** चाबहार बंदरगाह को विकसित और संचालित करके, भारत हिंद महासागर क्षेत्र में अपने रणनीतिक प्रभाव को बढ़ा सकता है, जिससे भारत की भू-राजनीतिक स्थिति मज़बूत हो सकती है।
    - चाबहार बंदरगाह **चीन द्वारा पाकिस्तान में ग्वादर बंदरगाह के विकास के प्रतिकार** के रूप में कार्य करेगा।
    - इसके अतिरिक्त, चाबहार में उपलब्ध डॉकिंग सुविधाओं के कारण भारत समुद्री डकैती के मामलों पर प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया दे सकता है और अरब सागर में रक्षा की पहली पंक्ति के रूप में काम कर सकता है।

चाबहार बंदरगाह की क्षमता को साकार करने में क्या चुनौतियाँ हैं?

- **ईरान को लेकर अमेरिका की चिंता:**
    - ईरान के चाबहार बंदरगाह के विकास के लिये दीर्घकालिक मुख्य अनुबंध पर हस्ताक्षर करने के पश्चात **संयुक्त राज्य अमेरिका** ने भारत को **"प्रतिबंधों के संभावित जोखिम"** की चेतावनी दी है।

        - **तेहरान में अमेरिकी दूतावास** पर कब्ज़ा करने के बाद, वर्ष 1979 से अमेरिका ने विभिन्न कानूनी प्राधिकरणों के तहत ईरान के साथ की जाने वाली आर्थिक गतिविधियों पर प्रतिबंध लगा दिया है।
        - इससे पहले वर्ष 2018 में **अमेरिका ने** चाबहार बंदरगाह की प्रगति और इसे अफगानिस्तान से जोड़ने हेतु रेलवे लिंक के निर्माण में सहायता के लिये **भारत को विशिष्ट प्रतिबंधों से छूट दी थी**।
- **हाउथी-लाल सागर संकट:**
    - हाउथी विद्रोही संचार के समुद्री मार्गों को बाधित कर सकते हैं, **जिससे चाबहार बंदरगाह पर यातायात भी प्रभावित होगा।**
- **सुरक्षा संबंधी चिंताएँ, क्षेत्रीय तनाव:**
    - **अफगानिस्तान से अमेरिका सेना की वापसी** और तालिबान के पुनः वापसी के कारण वहाँ **अस्थिरता** उत्पन्न हो गई है, जिसका **भारत के साथ व्यापार संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।**
    - **ईरान व उसके कुछ पड़ोसी देशों, जैसे कि इज़रायल के मध्य** अस्थिर संबंधों के साथ-साथ अफगानिस्तान तथा पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देशों में अस्थिर राजनीतिक स्थितियाँ भी **चाबहार बंदरगाह और भारत के आर्थिक हितों को प्रभावित कर रही हैं।**
- **समान परियोजनाओं से प्रतिस्पर्धा:**
    - चाहबहार में कई परिवहन मार्गों से चुनौतियाँ हैं, जैसे भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (India-Middle East-Europe Economic Corridor- IMEC) जो एशिया और पूर्वी यूरोप को जोड़ता है।

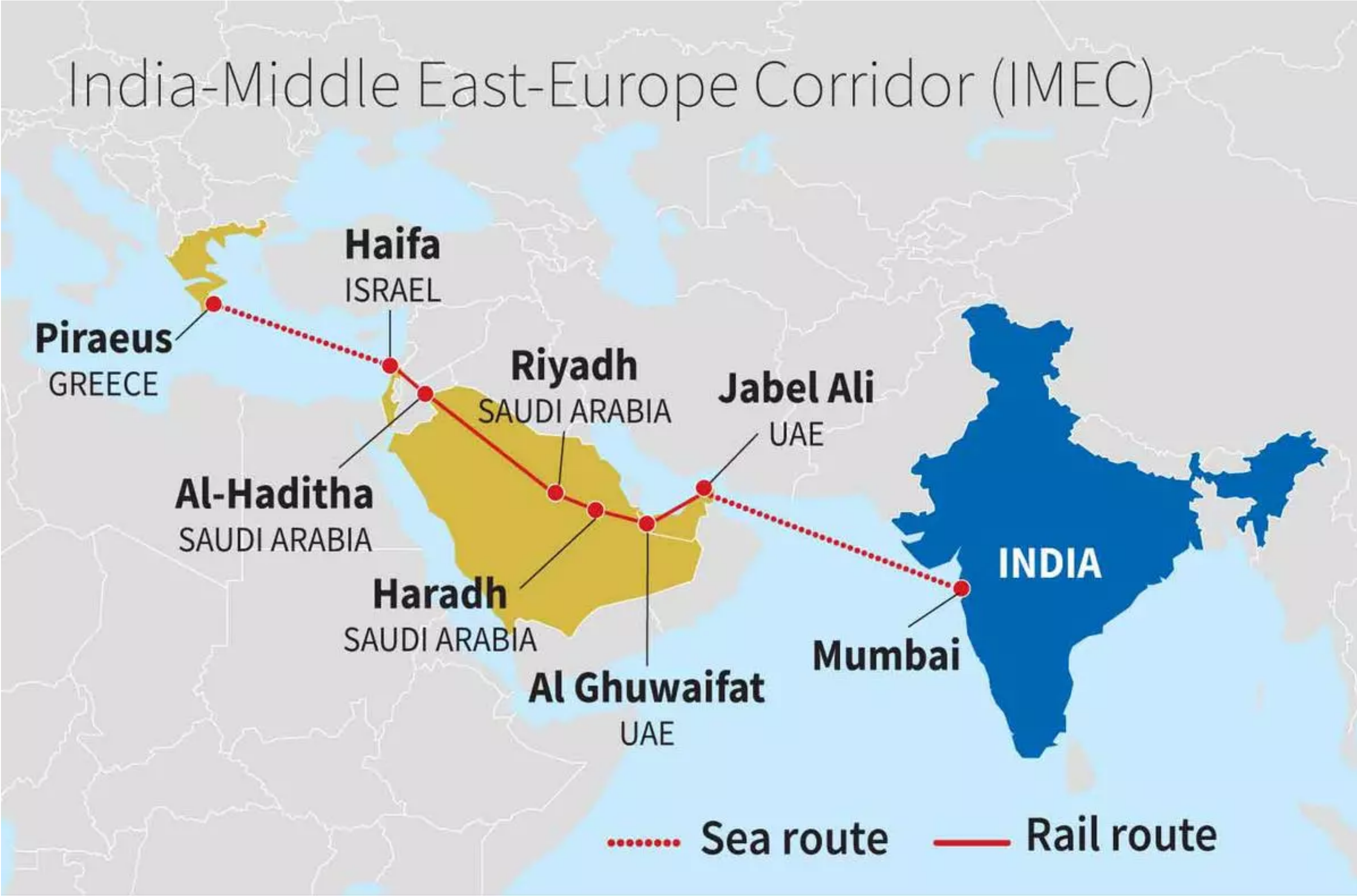

- **चीन से प्रतसि्पर्द्धा:**
  - चाबहार में चीन जैसे मज़बूत प्रतसि्पर्द्धयिों के द्वारा कयिा गया नविेश, ईरान में भारत के हतिों को प्रभावति कर सकता है।
- **अवसंरचना वकिास:**
  - चाबहार परयिोजना का उद्देश्य बंदरगाहों, सड़कों एवं रेलवे जैसे बुनयिादी ढाँचे में सुधार करना है, जसिके लयिे महत्त्वपूर्ण नविेश, समय तथा वशिेषज्ञता की आवश्यकता है। कोई भी देरी या अक्षमता इसकी प्रगतमिें बाधा बन सकती है।

भारत और ईरान के बीच आर्थकि संबंधों की स्थतिकि्या है?

- **वत्ति वर्ष 2022-23** के दौरान भारत-ईरान द्वपिक्षीय व्यापार **2.33 बलियिन अमेरकिी डॉलर** था, जो वर्ष-दर-वर्ष 21.76% की वृद्धदिर्शाता है।
- ईरान को भारत का **नर्यिात 1.66 बलियिन अमेरकिी डॉलर** था और ईरान से भारत का **आयात 672.12 मलियिन अमेरकिी डॉलर** था।
- पछिले वर्ष के इसी आंकड़े की तुलना में कुल व्यापार में 23.32% की कमी आई।
- भारत, ईरान को मुख्य रूप से कृषउित्पाद एवं पशु उत्पाद जैसे-मांस, दुग्ध उत्पाद, प्याज, लहसुन तथा डब्बिाबंद सब्ज़यिाँ नर्यिात करता था।
- ईरान से आयात में मथिाइल अल्कोहल, पेट्रोलयिम बटिुमेन, तरलीकृत ब्यूटेन, तरलीकृत प्रोपेन, सेब, खजूर और बादाम शामलि थे।
- अप्रैल 2000 से दसिंबर 2023 तक ईरान से भारत में FDI प्रवाह केवल 1 मलियिन अमेरकिी डॉलर दर्ज़ कयिा गया।
- भारत वर्तमान में **ईरानी तेल का आयात** नहीं करता है क्योंकईिरान, संयुक्त राज्य अमेरकिा (US) के प्रतबिंधों के अधीन है।

□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□:

रूस और यूरेशयिा के साथ भारतीय संपर्क को अनुकूल बनाने के लयिे INSTC और चाबहार पोर्ट एक दूसरे के पूरक कैसे सद्धि होंगे?

UPSC सवििल सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

□□□□□□□□□□□:

भारत द्वारा चाबहार बंदरगाह वकिसति करने का क्या महत्त्व है?(2017)

(a) अफ्रीकी देशों से भारत के व्यापार में अपार वृद्धि होगी।
(b) तेल-उत्पादक अरब देशों से भारत के संबंध सुदृढ़ होंगे।
(c) अफगानिस्तान और मध्य एशिया में पहुँच के लयि भारत को पाकिस्तान पर नरि्भर नहीं होना पड़ेगा।
(d) पाकिस्तान, इराक और भारत के बीच गैस पाइपलाइन का संस्थापन सुकर बनाएगा और उसकी सुरक्षा करेगा।

उत्तर: C

?????:

प्रश्न. इस समय जारी अमेरिका-ईरान नाभकिीय समझौता ववािद भारत के राष्ट्रीय हतिों को कसि प्रकार प्रभावति करेगा? भारत को इस स्थति के प्रतकि्रिया रवैया अपनाना चाहयि? (2018)

प्रश्न. भारत की ऊर्जा सुरक्षा का प्रश्न भारत की आर्थकि प्रगतकिा सर्वाधकि महत्त्वपूर्ण भाग है। पश्चमि एशयािई देशों के साथ भारत के ऊर्जा नीतसिहयोग का वश्लिेषण कीजयि। (2017)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/chabahar-port-agreement